प्राचीन भारत का इतिहास

(Ancient Indian History)

इतिहास

⇩

इति + हास

⇩

ऐसा हुआ था।

- **ई0एच0 कार के अनुसार** :– इतिहास वास्तव में अतीत के तथ्यों एवं इतिहासकारों के निजी दृष्टिकोण का परिणाम है, यह वर्तमान एवं अतीत के निरंतर संवाद का नाम है।
- **इतिहास तक –**

1 **प्राक इतिहास (प्रागतिहास)**

⇩

आध इतिहास

⇩

इतिहास

प्राक इतिहास (Pre History) – ऐसा इतिहास जिसके अध्ययन के लिए लिखित साक्ष्य उपलब्ध नहीं होते बल्कि मानव द्वारा प्रयुक्त किए गए औज़ार /उपकरणों पर निर्भर करना पड़ता है। इसके अंतर्गत सुदूर अतीत के आरंभ से लेकर ईसा पूर्व अंत तक के मनुष्य की संस्कृति का अध्ययन करते हैं।

आद्य इतिहास (Proto History) – इतिहास जिसके अध्ययन के लिए लिपि के साक्ष्य तो मिले हैं लेकिन उसे पढ़ा नहीं जा सका है जैसे हड़प्पा एवं पूर्व वैदिक काल।

इतिहास History जिसके अध्ययन के लिए लिखित पाठ्य तथा सुबोध साक्ष्य मिलते हैं।

प्रागैतिहासिक (प्राक – इतिहास) युग

प्रागैतिहासिक भारत की पृष्ठभूमि

- भारतीय प्रगैतिहास को उद्घाटित करने का श्रेय **डॉ प्रिमरोज** नामक अंग्रेज को है। सन 1842 में कर्नाटक के रायचूर दोआब में लिंगसुगुर नामक स्थान पर उन्होंने प्रागैतिहासिक औजारों (पत्थर के छुरे और तीर के फलक) की खोज की थी।
- **1853 में जबलपुर** के निकट नर्मदा नदी के किनारे प्राप्त कारीगरी की क्रिया से गुजरे पत्थरों (फ्लिंट पत्थर) का एक विवरण सर्वप्रथम **जॉन एवांस** ने दिया था।
- लेकिन भारत में पाषाण कालीन संस्कृति की खोज का कार्य प्रमाणित रुप से सर्वप्रथम **1863 ईस्वी** में उस समय आरंभ हुआ, जब **राबट ब्रुसफुट** ने **पल्लवरम** (मद्रास) से पूर्वपाषाण कालीन उपकरण खोज निकाले।
- सन 1930 में **एम0सी0 बर्किट** ने **कृष्णा घाटी** से एकत्रित सामग्री का एक विवरण प्रस्तुत किया तथा इन उपकरणों को चार श्रेणियों में वर्गीकृत किया।
    1. हस्त कुल्हाड़ी तथा क्लीवर
    2. फलक उपकरण
    3. स्क्रैपर, ब्लेड, व्यूरिन
    4. लघु उपकरण
- **विलियम किंग** ने **अत्तिर पक्कम** तथा **नारायणी नदी** के किनारे अनेक प्रकार के पाषाण उपकरण प्राप्त किए।
- भारत में पाषाण उपकरणों को ढूंढने का कार्य **जूलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया (Geological Survey of India)** ने प्रारंभ करवाया था।
- सर्वाधिक महत्वपूर्ण अनुसंधान तब हो सका, जब 1935 में **डी0 टेरा** तथा **पीटरसन** के नेतृत्व वाले **यल कम्ब्रिज अभियान दल** ने शिवालिक पहाड़ियों की तलहटी में स्थित पोतवार के पठारी भाग का व्यापक सर्वेक्षण किया।

- अंततः सर मर्टिमर हवीलर ने प्रागैतिहासिक संस्कृतिक अनुक्रम का ज्ञान प्राप्त किया। इसी के साथ भारत प्रागैतिहासिक विश्व के मानचित्र पर भली–भांति प्रतिष्ठापित हो गया।
- सन 1950 में स्टुअर्ट पिग्गत की कृति 'प्री हिस्टोरिक इंडिया' के प्रकाशन के रूप में सामने आया।
- प्रसिद्ध पुरातत्ववेत्ता वी0 गार्डन चाइल्ड ने पुरानी दुनिया के प्रागैतिहास की एक विस्तृत रूपरेखा तैयार की। इनके अनुसार समस्त प्रागैतिहासिक नवप्रवर्तनों का केंद्र निकटपूर्व में था।

नोट : लुईस मार्गन ने 1877 में एक विचार प्रस्तुत किया कि संस्कृतियाँ–

'जंगली → बर्बर → सभ्यता'

की अवस्था से गुजरती हैं।

- हथनौरा (नर्मदा मानव) भारत में मानव का प्रथम जीवाश्मीय साक्ष्य माना जाता है।
- विद्वानों का विचार है कि सभ्यता का उदय और विकास अतिनूतन काल (प्लिस्टोसीन काल) में हुआ।
- भारत में मानव के प्राचीनतम अस्तित्व का संकेत द्वितीय हिमवर्तन (ग्लेशियर) काल की परतों से प्राप्त पत्थर के उपकरणों में मिलता है।
- **महाराष्ट्र की बोरो नामक स्थल की खुदाई** से प्राप्त नवीनतम् जानकारी के आधार पर मानव का अस्तित्व **14 लाख वर्ष पहले माना** जा सकता है।
- मानव संस्कृति का प्रथम अध्याय लिखने वाला मानव वास्तव में **'Homo Sapiens'** नहीं बल्कि '**होमोनिड**' था जिसने पहली बार यह सिद्ध किया कि मानव अन्य प्राणियों की तुलना में उच्च है।
- भारत में मानव विकास के **अद्यतन साक्ष्य शिवालिक पहाड़ी के अभिनूतन (Pliocene) युगीन निक्षेपों** से प्राप्त हुआ है। जिसे राम पिथेकस की संज्ञा दी गयी जो 'Homomid' का ही एक प्रकार है।

➢ मानव विकास का क्रम

1. रामा पिथैकस
2. ऑस्ट्रेलो पिथेकस (अफ्रीकैनिस)
3. होमो इरेक्ट्स (पिथकैथ्रोपस)
4. निएण्डर थल
5. होमोसैपियंस
    i. क्रोमैगनन
    ii. चांसलेड
    iii. ग्रेमाल्डी

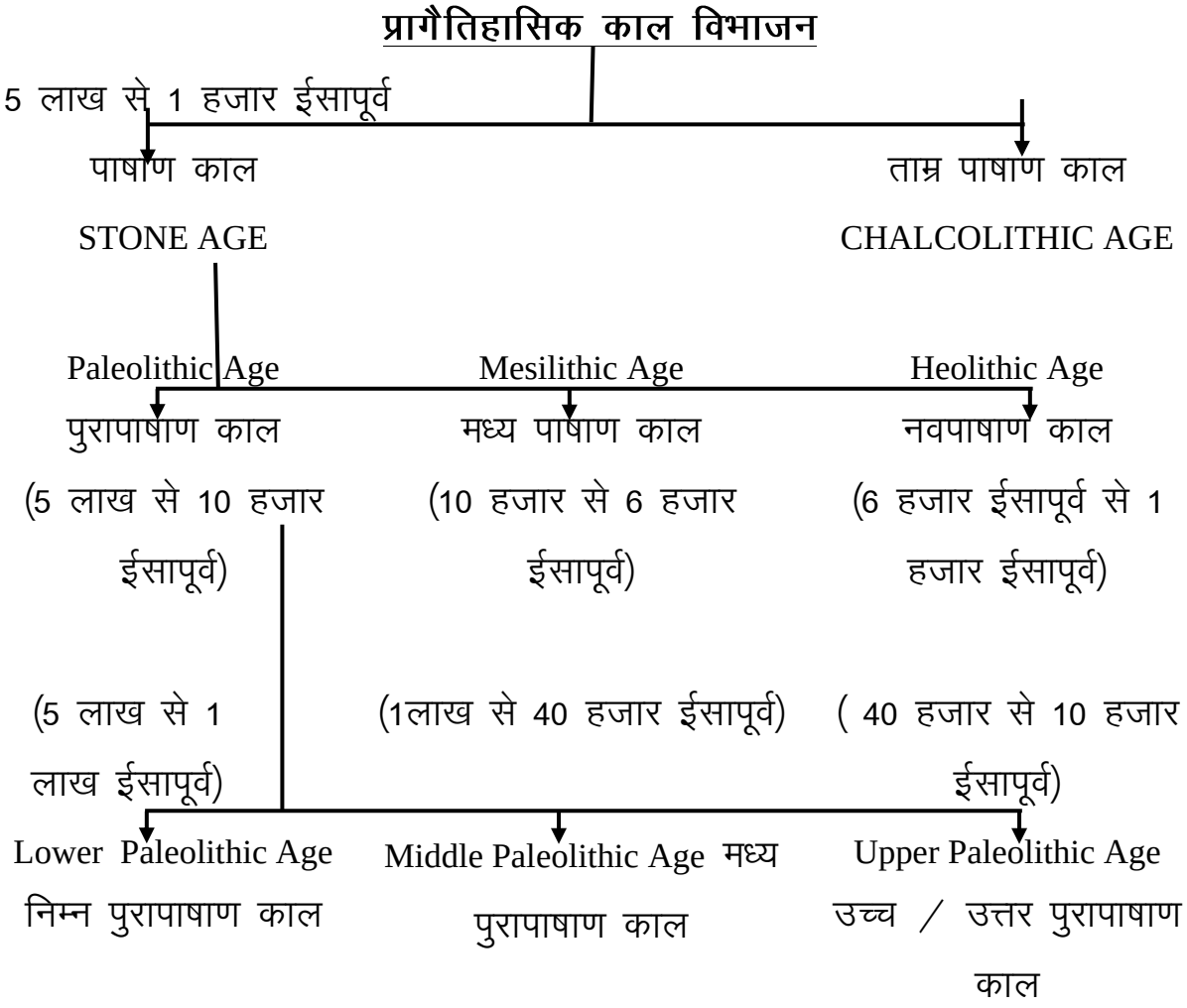

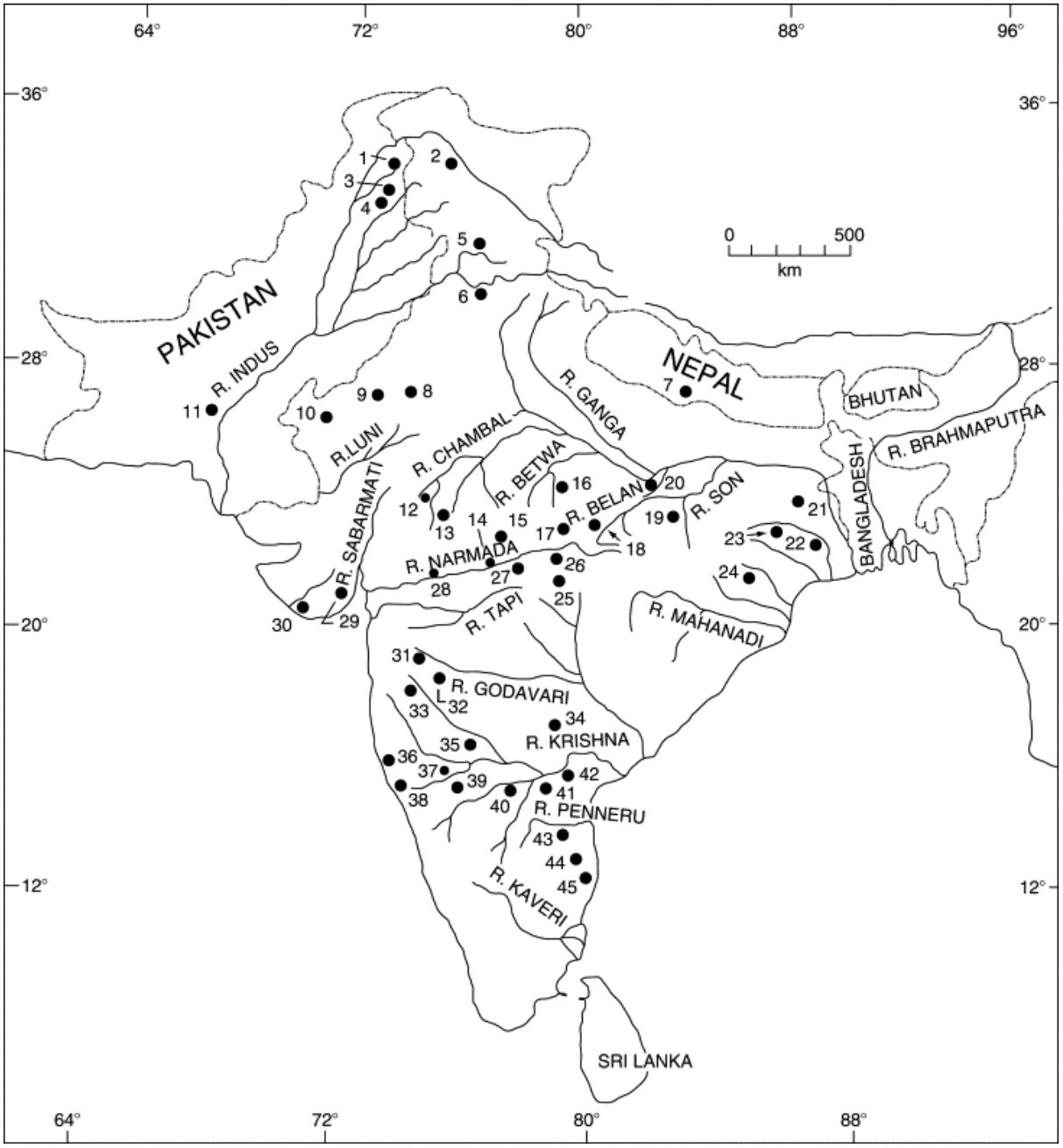

भारत के प्रस्तर युग के महत्वपूर्ण स्थल

निम्न पुरा पाषाण काल

(Lower Paleolithic Age)

(5 लाख से 1 लाख ईसा पूर्व)

- यह मानव के प्रारंभ से होमोइरेक्ट्स तक का काल था।

  It was the period of Australopithecus and Homo erectus.

- इस काल में मानव ने अपने औजार निर्माण में स्फटिक एवं क्वार्टजाइट पत्थर को प्रयोग में लाया।
- इस काल में मानव ने

  1. गड़ासा
  2. कुल्हाड़ी
  3. विदरिणी

  जैसे औजारों को बनाया।

- इस काल के औजार **द्वितीय हिमयुग** के हैं।
- निम्न पुरा पाषाण कालीन उपकरणों को दो भागों में बांटा जा सकता है

1. चॉपर चॉपिंग पेबुल उपकरण
2. हैण्ड एक्स उपकरण (एश्यूलियन संस्कृति)

चांपर चॉपिंग पेबुल उपकरण :–

सर्वप्रथम डी0 एन0 वाडिया ने 1928 में पंजाब (वर्तमान पाकिस्तान) स्थित सोहन घाटी से चॉपर–चॉपिंग (पेबुल उपकरण) के अवशेष खोज निकाले, इसीलिए इसे **सोहन संस्कृति** कहते हैं।

पेबुल उपकरण पत्थर के वे छोटे–छोटे उपकरण है जो पानी के बहाव से रगड़ खाकर चिकने होकर औजार का रूप धारण कर लिया जिनका प्रयोग, आदि मानव ने अपनी सुरक्षा एवं अन्य कार्यों में किया।

चॉपर–चापिंग उपकरण बड़े आकार वाले औजार होते हैं जिन्हें पेबुल उपकरणों का प्रयोग करके बनाया जाता है अर्थात इन्हीं पेबुल उपकरणों का प्रयोग करके आदि मानव ने धारदार एवं नोकदार उपकरण बनाएं।

हैंड एक्स उपकरण (Hand axe Instruments)

हैंड एक्स सस्कृति के अवशेष सर्वप्रथम **रॉबर्ट ब्रूसफूट** ने **1863 में मद्रास के निकट 'पल्लवरम्'** से खोजा। इस प्रकार के उपकरण हथौड़ी या कुल्हाड़ी के आकार के होते हैं।

निम्न पुरापाषाण काल में जीवन

(Life in lower paleolithic period)

निम्न पुरा पाषाण काल में आदि मानव मुख्यतः आखेटक एवं खाद्य संग्राहक था। उसका जीवन पूर्णतः प्राकृतिक था। इस काल में मानव ने आग को देख लिया था लेकिन प्रयोग करना नहीं जानता था, इसलिए आदि मानव कच्चा मांस, कंदमूल फल खाता तथा खानाबदोशी जीवन व्यतीत करता था।

प्रमुख स्थल (Important Sites)

1. सोहन घाटी (पाकिस्तान)
2. सिंगरौली घाटी (उ0प्र0)
3. पल्लवरम्
4. अत्तिरपक्कम
5. बदमदुरै
6. माना जनकराम्
7. गिद्दलूर
8. करीमपुड़ी

मध्य पुरापाषाण काल

(Middle Paleolithic Period)

- यह **निएण्डर थल मानव** का युग था।
- इस काल में मानव ने स्फटिक के स्थान पर **चर्ट, जैस्पर एवं फ्लिण्ट पत्थरों** से औजार बनाया।
- इस काल में मानव ने मूल पत्थर की **चिप्पियो (flake)** से भी उपकरण बनाना प्रारंभ कर दिया था, फलतः **एच0डी0 सांकालिया** महोदय ने इस काल की संस्कृति को **फलक संस्कृति** कहा।
- इस काल में मानव ने–
    - बेधक (Borer)
    - बेधक खुरचुनी (Scraper Barer)
    - फलक जैसे स्थूल शल्क (blade like thick flakes)
    - बेधनियाँ (Points)

  जैसे उपकरण बनाए।
- इस काल के प्रमुख स्थल हैं
    - नेवासा (प्रारूपिक स्थल)
    - चकिया (बनारस)
    - बेलन घाटी (इलाहाबाद)

उच्च /उत्तर पुरा पाषाण काल

(Later Paleolithic Period)

- यह **होमोसपियंस** मानव का युग था।
- इस काल में मानव ने **ब्लेड उपकरण** बनाए जिसके लिए उसने **चकमक पत्थर** एवं **हड्डियों** का प्रयोग किया।
- इस काल में बनाए गए उपकरण थे
    - तक्षणी
    - खुरचनी
    - अलंकृत छड़े
    - मत्स्य भाले
    - नोकदर सुइयां
    - भले की नोक
- इस काल से संबंधित स्थल से
    - बेलन घाटी (इलाहाबद)
    - भीमबेटका की गुफाएं (मध्य प्रदेश)
    - रेनू गुंटा
    - बेटमचेर्ला (आंध्र प्रदेश)

समाज :– इस काल में मानव सामाजिक जीवन का प्रारंभ कर दिया था एवं शारीरिक दृष्टि से शक्तिशाली एवं साहसी मनुष्यों ने कमजोर एवं वृद्धों तथा बच्चों की सुरक्षा एवं खाद्य आपूर्ति की जिम्मेदारी ले ली थी परंतु अभी तक मानव जीवन प्राकृतिक ही बना रहा। मानव का भोजन अभी भी मांस एवं कंदमूल ही था।

अर्थव्यवस्था :–

अभी मानव खाद्य पदार्थों का उपभोक्ता ही था उत्पादक नहीं बना था। अभी स्वामित्व एवं निजी भावना का विकास नहीं हुआ था।

धर्म एवं कला :–

संभवत इस काल तक आते–आते मानव के अंदर धर्म की भावना प्रकट होने लगी थी। इसकी **पुष्टि लोहदा नाले (बेलन घाटी) से प्राप्त हड्डो की मातृदेवी** की मूर्ति है।

मानव नक्काशी एवं चित्रकारी भी सीख गया था जिसके कुछ साक्ष्य मध्य प्रदेश के रायसेन जिले में स्थित भीमबेटका की गुफाओं से मिलता है।

भीमबैठका : शिकार करते मानव यशोधरमठ पाल (1984) के सौजन्य से

(Mesolithic Period) मध्य पाषाण काल

(Holocene Age)

- सर्वप्रथम सी0एल0 कर्लाइल में विंध्य क्षेत्र से इस काल के उपकरण खोजे।
- इस काल के उपकरण उन्नत, एवं उन्नत तकनीकि के आधार पर बनाये गये सूक्ष्म आकार (Microlithic) के थे फलतः इन्हें Microlithic Instrument तथा इस काल को MicrolithicAge भी कहते है।
- इस काल के उपकरण कोर एवं फलक दोनों से बनाए गए थे।
- इस काल के प्रमुख उपकरण थे
    - इकधार फलक (Backed Blade)
    - बेधनी (Point)
    - अर्धचंद्राकार (Lunate)
    - समलम्ब (Trapeze)
- इस काल में मानव ने पहली बार पशुपालन प्रारंभ किया, जिसके साक्ष्य–
    1. बागोर (राजस्थान)
    2. आदमगढ़ (मध्य प्रदेश)

    से सर्वप्रथम प्राप्त हुए।
- ऐसी मान्यता है कि मानव ने सर्वप्रथम कुत्ता पाला।
- इस काल तक आते–आते मौसम में काफी कुछ परिवर्तन के साथ–साथ सांस्कृतिक दिशा में भी परिवर्तन हुए –
    - हालांकि मानव आज भी आखेटक एवं खाद्य संग्राहक रहा था लेकिन कब्रिस्तान बनाने की दिशा में वह काफी आगे बढ़ गया आया था जो उसके मानसिक एवं सांस्कृतिक विकास की द्योतक है।
    - तकनीकी स्तर पर मानव ने प्रक्षेपास्त्र तकनीकी (गुलेल एवं तीर–कमान) का आविष्कार कर लिया था।
    - नाली अलंकरण तकनीक इसी काल की देन मानी जाती है।

- इसी काल में मानव ने उत्तोलक प्रणाली का विकास किया था।

प्रमुख स्थल :–

<u>1 सराय नाहर</u> –

- यह मध्य पाषाण काल का सबसे प्राचीन स्थल है।
- यह प्रतापगढ़ (उत्तर प्रदेश) में स्थित है।
- यहां से अनेक शवाधान एवं गर्त चूल्हे मिले हैं।

सराय नाहर रायः संयुक्त रूप से समाधिस्थ चार मानव कंकाल जी0आर0 शर्मा (1973) के सौजन्य से

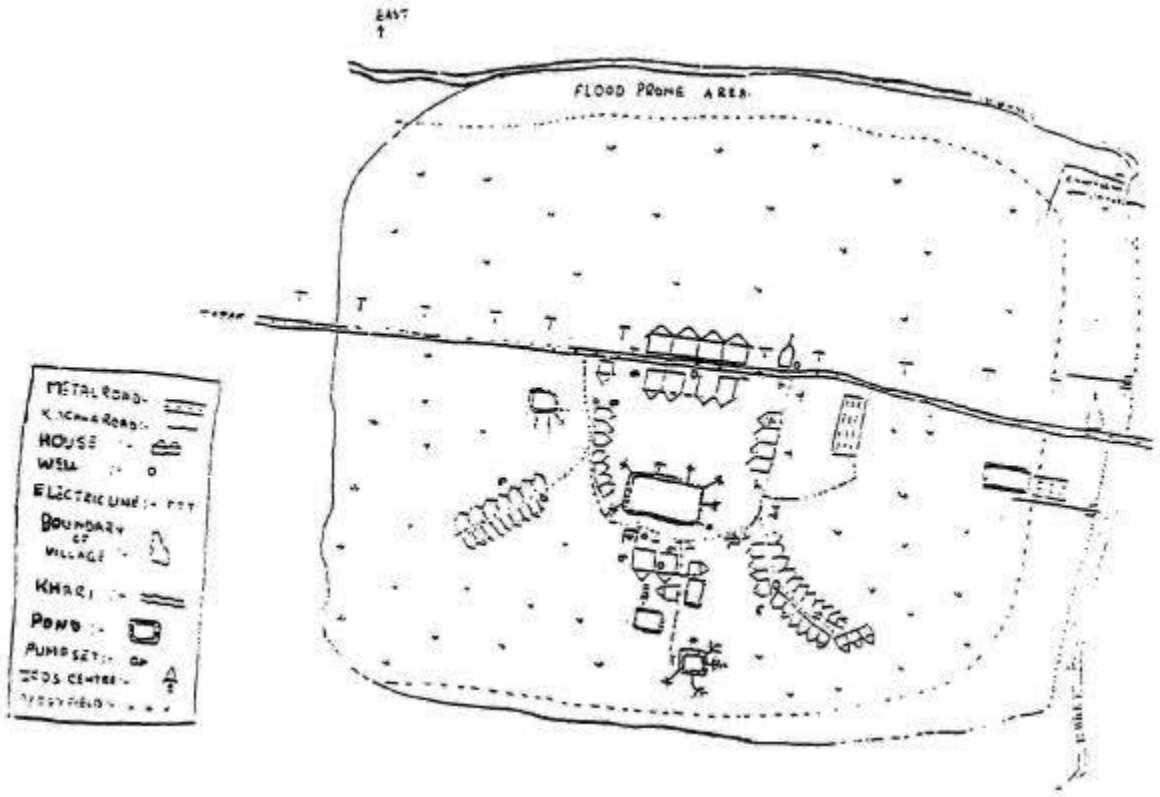

सराय नाहर रायः स्तम्भ–गर्त युक्त झोपड़ी जी0आर0 शर्मा (1973) के सौजन्य से

A

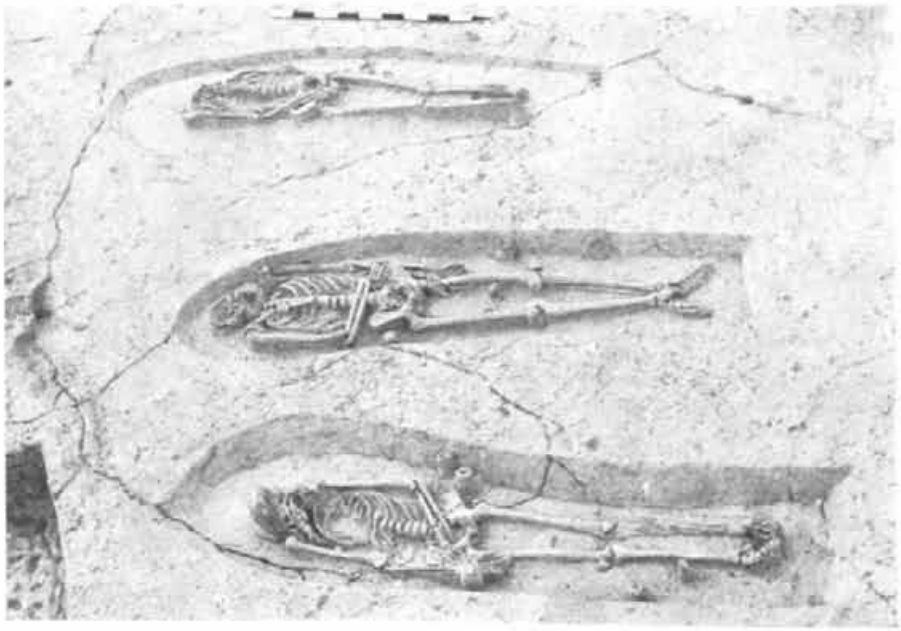

B

Sarai Nahar Rai : A and B, excavated graves. See p. 48

सराय नाहर रायः मानव समाधियों का विहंगम दृश्य जी0आर0 शर्मा (1973) के सौजन्य से

- सराय नाहर के एक शवाधान से प्राप्त कंकाल को **शिरोस्थि** में बाण का चिन्ह है जो भयंकर युद्ध की ओर संकेत करता है।
- यहां के चूल्हों से अधजली हड्डियाँ प्राप्त हुई हैं।
- सराय नाहर से संयुक्त समाधियों के भी अवशेष प्राप्त हुए हैं।
- यहां के शवों का सिर पश्चिम एवं पैर पूरब की तरफ हैं।

2 महादहा :–

- महादहा भी उत्तर प्रदेश में स्थित मध्य पाषाणिक स्थल है।
- महादहा से अनेक मानव समाधियों के साक्ष्य मिले हैं।
- एक शवाधान में मानव कंकाल **में कुण्डल** का साक्ष्य मिला है।
- अनेक हड्डी के बने हुए आभूषण एवं औजार भी महादहा के पुरातत्विक समृद्ध देश की ओर संकेत हैं।
- महादहा से अनेक युगल समाधियों के भी साक्ष्य मिले हैं।
- यहां से सिल–लोढ़े के भी साक्ष्य मिले हैं संभवत यहाँ के लोग घास के दाने को पीस कर खाते रहे होंगे।

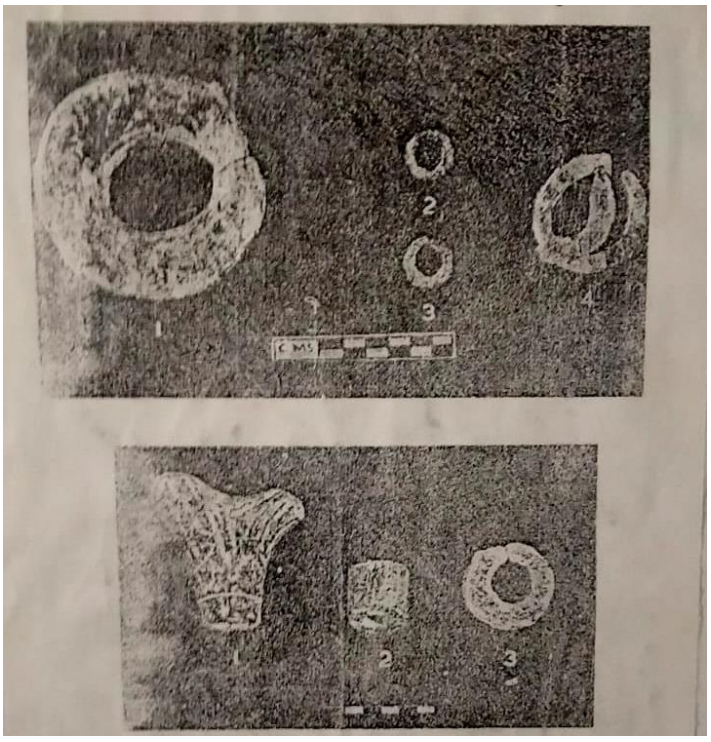

महादहा अस्थि आभूषण एवं अस्थियाँ जी आर शर्मा (1980) के सौजन्य से

महदहा कुण्डल पहने हुए मानव कंकाल जी0आर0 शर्मा (1980) के सौजन्य से

महादहा : अस्थि उपकरण जी0आर0 शर्मा (1980) के सौजन्य से

महादहाः समाधिस्थ मानव कंकाल जी0आर0 शर्मा (1980) के सौजन्य से

3 दमदमा :–

- दमदमा नामक पुरास्थल भी उत्तर प्रदेश के प्रतापगढ़ जिले में स्थित है।
- यहां से एक औंधे मुँह समाधिस्थ मानव कंकाल प्राप्त हुआ है।
- यहां से युग्म में मानव समाधि के भी साक्ष्य मिले हैं।
- दमदमा से एक मानव समाधि भी प्राप्त हुई है।
- दमदमा से हड्डी एवं सींग के उपकरण एवं आभूषण प्राप्त हुए हैं।

दमदमा जो मानव समाधि आर0 के0 शर्मा एवं अन्य (1985) के सौजन्य से।

दमदमा: त्रि मानव समाधि आर0के0 वर्मा एवं अन्य (1985) के सौजन्य से

Plates No. 9. Damdama: Extended Human Burials at Grave No. VII

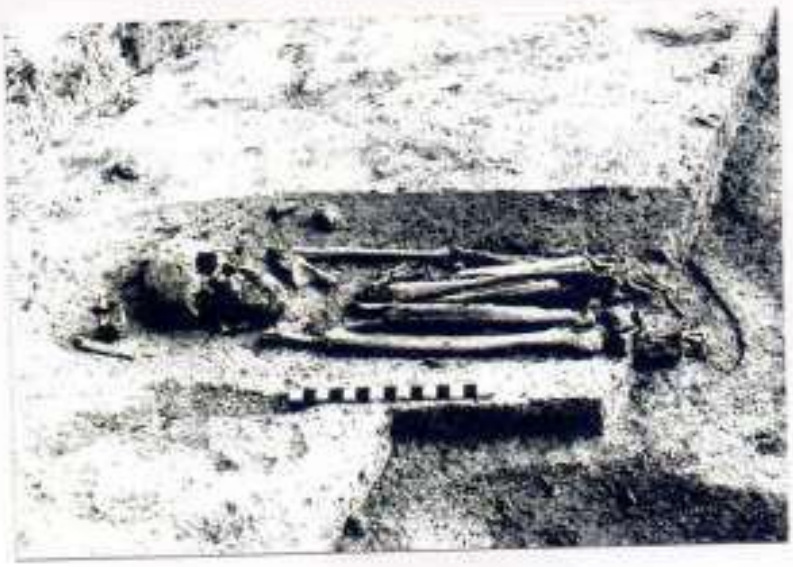

Plate No. 10. Damdama: Flexed Burial, Grave No. I

दमदमा औंधे मुँह समाधिस्थ मानव कंकाल आर0के0 वर्मा एवं अन्य (1985) के सौजन्य से

4 बागोर :–

- बागोर नामक स्थल की खोज 1965–70 ईस्वी में वी0एन0 मिश्र ने की थी।
- यहां से पशुपालन के प्रारंभिक साक्ष्य मिले हैं।
- यहां पर फर्श बनाने के लिए पत्थर का उपयोग हुआ है।
- यहां से लौहकाल के भी कुछ उपकरण प्राप्त हुए हैं।
- बागोर से ताम्र वाणाग्र के भी साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।

बागोर का ताम्र वाणाग्र (द्वितीय उपकाल) उपकरण वी0एन0 मिश्र (1973) के सौजन्य से

बागोर – मानव कंकाल प्रथम काल वी0एन0 मिश्र (1982) के सौजन्य से

5 मोरहना :–

- उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर जिले मोरहना पहाड़ी से बैलगाड़ी का साक्ष्य प्राप्त हुआ है।

मोरहना पहाड़ी : बैलगाड़ी अल्विन (1982) के सौजन्य से

6 महागड़ा :–

- उत्तर प्रदेश के महागढ़ा नामक स्थल आयताकार पशुबाड़ा का साक्ष्य मिला है।

महागड़ा आयताकार पशुबाड़ा

7A बघही खोर :–

- बघही खोर एक महत्वपूर्ण मध्य पाषाणिक स्थल है।
- यहां से मानव के शैलाश्रय प्राप्त हुए हैं।

बघही खोर शैलाश्रय

मोरहना पहाड़ी उत्खनन से प्राप्त परिणामों से मिलता जुलता लघु पाषाण उपकरणों का विकासात्मक क्रम बघहीखोर के उत्खनन से भी ज्ञात हुआ है। नीचे से ऊपर की ओर बघहीखोर विभिन्न स्तरों का विवरण इस प्रकार है सबसे निचला चतुर्थ स्तर प्रस्तर के छोटे–छोटे टुकड़ों (Chips), राख तथा राख मिश्रित

7 चिरांड

- बिहार के चिरांड नामक स्थल से हड्डी के अन्य उपकरण प्राप्त हुए हैं।

चिरांड अस्थि उपकरण सौजन्य बी0एन0 वर्मा (1970–71)

8 आदमगढ़

- आदमगढ़ मध्य प्रदेश में स्थित मध्य पाषाणिक स्थल है।
- इसकी खुदाई 1964 में आर0 वी0 जोशी ने किया।
- यहां से पशुपालन के साक्ष्य के साथ–साथ शिकार के दृश्य भी प्राप्त हुए हैं।

9 लंघनाज

- लंघनाज़ गुजरात में स्थित मध्य पाषाणिक स्थल है।
- इसकी खुदाई एच0डी0 संकालिया, डी0 सुब्बाराव एवं ए0आर0 कनेडी ने करवायी थी।
- यहां पर फ्लेक उपकरणों की प्रधानता है।
- यहां से गैंडे की हड्डी के औजार प्राप्त हुए हैं।
- यहां से पत्थर की मुद्रिका प्राप्त हुई है।
- यहां पर कछुआ, हिरण, भैंस, नीलगाय के संकेत प्राप्त हुए हैं।

10 चोपनी मांडो

- यह उत्तर प्रदेश में स्थित प्रमुख मध्य पाषाणिक स्थल है।

- यहां से जंगली खेती के प्रमाण प्राप्त हुए हैं।
- यहां से हाथ के बने मिट्टी के बर्तन प्राप्त हुए हैं।
- यहां से छत्तेदर झोपड़ी के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।

लंघनाज़ : मुड़ी हुई अवस्था में समाधिस्थ मानव कंकाल सांकलिया (1974) के सौजन्य से।

लंघनाज़ के उत्खनन में 14 मानव कंकाल प्राप्त हुए हैं, जिनमें से 13 को पैर मोड़ कर दाहिनी करवट ले लिटाकर दफनाया गया था। चौदहवाँ कंकाल विस्तीर्ण मुद्रा में दफनाया गया था। 14 में से 13 सालों के सिर पूर्व दिशा में और पैर पश्चिम दिशा में थे।

मध्यपाषाण काल के प्रमुख स्थल

(Neolithic Period) नवपाषाण काल

'उत्पादक मानव का काल'

- नवपाषाण काल अनेक दृष्टि से महत्वपूर्ण है। यही वह काल है जिसमें मानव खाद्य पदार्थों के उपभोक्ता के साथ–साथ उत्पादक भी बना।
- संभवतः मानव ने अपने उत्पादन कार्यों का आवश्यकतावश **स्थाई जीवन** का प्रारंभ किया।
- अपने उत्पादन को रखने के लिए ही मानव ने **मृदभाण्डों का निर्माण** प्रारंभ किया और उसे और उन्नत बनाने के लिए **चाक का आविष्कार** किया।
- इन मृदभाण्डों को ऑवें में पकाया। अतः कहा जा सकता है कि मानव ने इसी काल में आग का उपयोग अपने लिए प्रारंभ कर दिया।
- इस काल के प्रमुख उपकरण निम्न है –
    1. टंकित, घर्षित एवं पॉलिशदार पाषाण उपकरण
    2. सूक्ष्म पाषाण उपकरण
    3. सींगो के उपकरण इत्यादि।
- इस साल के प्रमुख स्थल हैं –
    - मेहरगढ़
    - कोल्डिहवा
    - बुर्जहोम
    - गुफकराल
    - चोपानीमांडो
    - चिरांड
    - बेलारी
    - कछार घाटी (असम)
    - नागार्जुन कोंडा (आंध्र प्रदेश)

- नवपाषाण काल के, **प्रथम पत्थर के उपकरण**, उत्तर प्रदेश के **टोंस नदी घाटी** में सबसे पहले **1860 में लेन्मेसुरियर** ने प्राप्त किया था।
- प्रमुख स्थलों से संबंधित विवरण निम्नलिखित है–

मेहरगढ़ :–

- मेहरगढ़ नवपाषाणकालीन ऐसी बस्ती है जो पाकिस्तान के बलूचिस्तान प्रांत में स्थित है।
- मेहरगढ़ में बसने वाले नवपाषाणिक लोग अधिक उन्नत थे। वे गेहूँ, जौ, तथा कपास उगाते थे और कच्ची ईंटों के घरों में रहते थे।
- खेती का प्राचीनतम साक्ष्य यहीं से प्राप्त है।

कोल्डिहवा :–

- यह स्थल इलाहाबाद के पास स्थित है।
- यह ऐसा नवपाषाणिक पुरास्थल है जहाँ से **चावल उगाने का प्राचीनतम साक्ष्य** प्राप्त हुआ है।
- यहां से **डोरी छाप मिट्टी** के बर्तन प्राप्त हुए हैं।

चिरांड :–

- चिरांड बिहार में स्थित **नवपाषाणिक स्थल** है।
- यहां से **हिरण के सींगों के बने उपकरण** प्राप्त हुए हैं।
- यहाँ से **टोटीदर बर्तन के साक्षय** प्राप्त हुए हैं।

बुर्जहोम :–

- बुर्जहोम नवपाषाण युगीन स्थल है जो कश्मीर में श्रीनगर से 16 किलोमीटर दूर उत्तर–पश्चिम में स्थित है इस स्थल की खोज पीटरसन महोदय ने की थी। बुर्जहोम का अर्थ भुर्जवृक्ष का स्थान। यहां के मानव झील के किनारे जमीन के नीचे घर बनाकर रहते, शिकार करते एवं मछली पर जीवन जीते थे।
- बुर्ज होम के लोग खेती से परिचित थे।

- यह लोग रूखड़े धूसर मृदभाण्डों का प्रयोग करते थे।
- यहां की कब्रों में मानव के साथ कुत्ते को दफनाये जाने के प्रमाण मिले हैं।
- यहां के एक शिलापट्ट पर शिकार के दृश्य प्राप्त हुए हैं।
- यहां बर्तन की रंगाई लाल रंग से की गयी है।

गुफकराल :–

- यह कश्मीर में स्थित नवपाषाणिक स्थल है।
- गुफकराल का अर्थ है – कुम्हार की गुफा।
- यहां के लोग कृषि एवं पशुपालन दोनों करते थे।
- पत्थर के पॉलिशदार औजारों के साथ–साथ यहां के लोग हड्डी के औजार और हथियारों का प्रयोग करते थे।
- यहां से हड्डी की सुइयां प्राप्त हुई।
- यहां से सिलबट्टे से अनाज पीसने के साक्ष्य भी मिले हैं।

चोपानी मांडो :–

- यहां से स्थाई जीवन के साथ–साथ छततेदार झोपड़ी के साक्ष्य मिले हैं।

ब्रहमगिरी :–

- दक्षिण भारत में स्थित इस स्थल से चमकीली पाषाण कुल्हाड़ी संस्कृति का पता चला है।

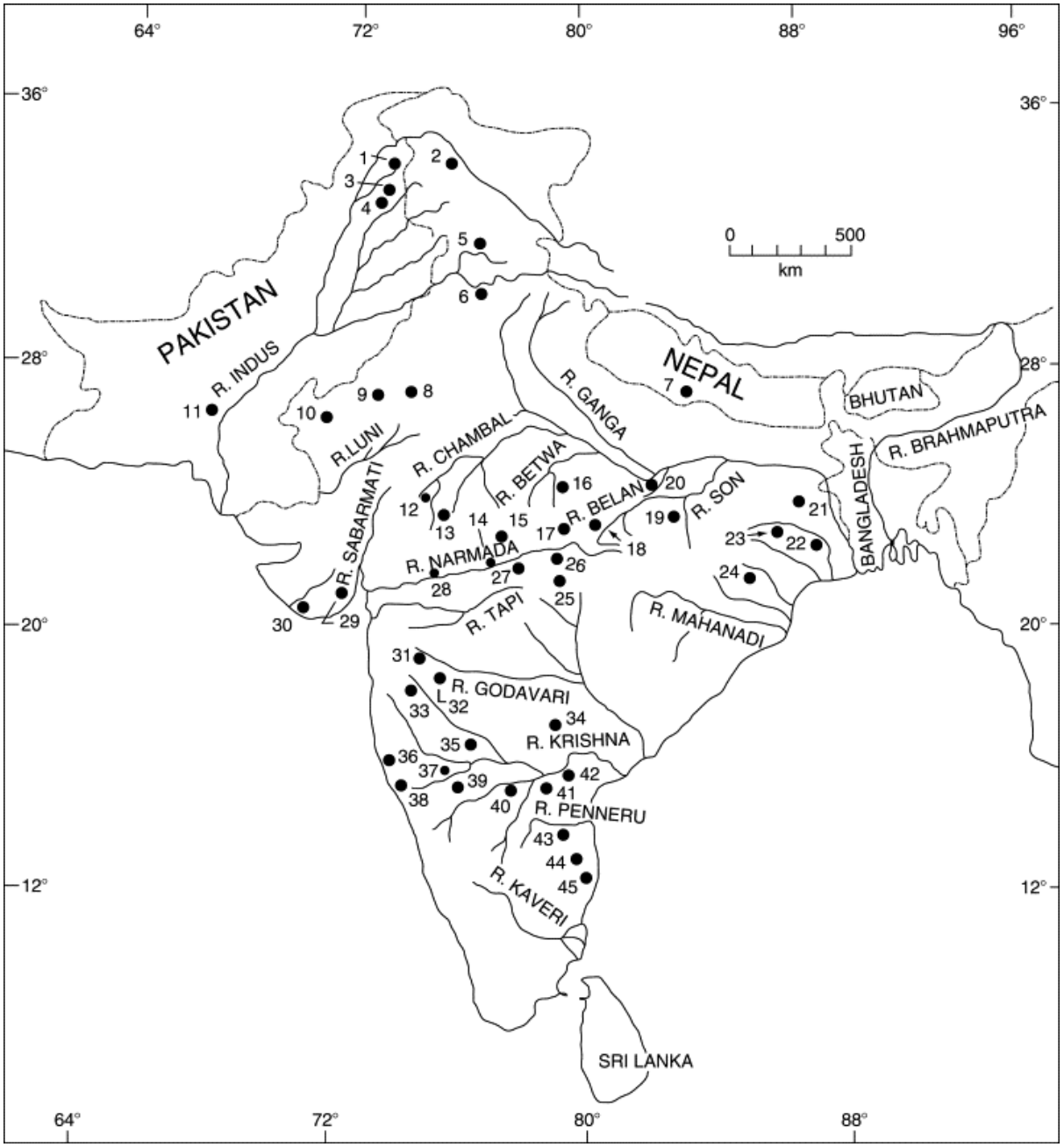

नवपाषाण काल के महत्वपूर्ण स्थल

बुर्जहोम : मानव शावधान सौजन्य भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण

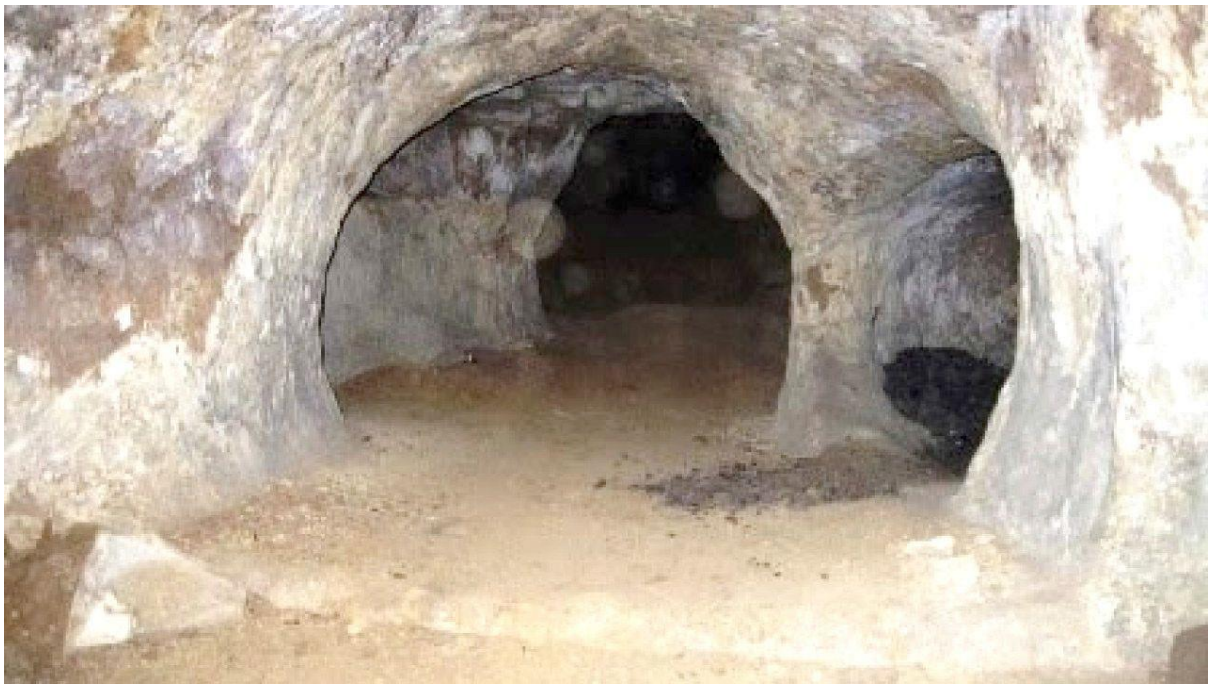

बुर्जहोम आवासीय गड्ढा सौजन्य भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण

Burzahom : Burial of a dog

बुर्जहोम कुत्ते का शवाधान सौजन्य भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण

<u>डॉग्स</u> :–

- यहां से मूठ वाले खेती के औजार प्राप्त हुई है।

<u>बेलारी</u> :–

- यह कर्नाटक में स्थित नवपाषाणिक स्थल है।
- यह दक्षिण भारत में नवपाषाण कालीन सभ्यता का केंद्र बिंदु माना जाता है।